सफलता की कहानियां

जिला सिरमौर

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

हिमाचल सरकार

मार्गदर्शन

डा० अजय शर्मा (भा.प्र.से.)
सचिव कृषि

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
राज्य परियोजना निदेशक
(प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना)

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

तकनीकी सहयोग

डॉ० मनोज गुप्ता
प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र

इकबाल ठाकुर
मीडिया सलाहकार

डॉ० सुरेन्द्र चंदेल
कृषि प्रसार अधिकारी

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 8,000 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा० प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। सिरमौर जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

–जयराम ठाकुर

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण
विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान-बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले 3 वर्षों में लगभग 1,29,299 किसान-बागवानों का 3,428 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि-भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान-बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट-बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल-जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय पहल है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान-बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान-बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

-वीरेन्द्र कंवर

हिमाचल प्रदेश सरकार

सचिव कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

सतत् एवं स्थाई कृषि विकास में प्राकृतिक कृषि का अपना स्थान है। यह गर्व का विषय है कि इस क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश का उल्लेख होना हमारे लिए गर्व की बात है। प्रदेश के किसान – बागवान न केवल मेहनती एवं प्रगतिशील हैं, बल्कि वर्तमान खेती व्यवस्था से जुड़े विषयों मिट्टी का स्वास्थ्य, धरती में पानी की उपलब्धता, पर्यावरण संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य जैसे ज्वलंत मुद्दों के प्रति संवेदनशील भी हैं। यह आवश्यक है क्योंकि खेती – बागवानी में बढ़ते रसायनों के प्रयोग से साल – दर – साल बढ़ती खेती की लागत तथा अस्थिर होता उत्पादन एक चिंता का विषय बनता जा रहा है।

कृषि को किसान के लिए हितकारी बनाने का लक्ष्य लेकर प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है। इस विधि की निरंतर सफलता ने यह सिद्ध किया है कि किसानों की आय बढ़ाने और उनके दीर्घकालिक कल्याण के लिए यह विधि एक सशक्त विकल्प है। वर्तमान में उपलब्ध आंकड़ों से यह प्रतीत हो रहा है कि स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए किसान – बागवान कम खेती लागत और कम पानी का प्रयोग करके भूमि की उर्वरता को लगातार बरकरार रखते हुए अच्छी उपज ले रहे हैं।

प्रदेश के मा० मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं मा० कृषि एवं पशुपालन मंत्री जी के नेतृत्व में सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के कार्यान्वयन व निगरानी के साथ तय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गम्भीर एवं सार्थक प्रयास किए हैं। आंकड़ों के अनुसार प्रदेश भर में 1,29,299 किसानों ने इस विधि को आंशिक या पूर्ण भूमि पर अपनाकर इस नई पहल की सार्थकता को स्थापित किया है।

जून 2018 में योजना के प्रारंभ होने के बाद से प्रदेश भर से किसानों की सफलता की कहानियां प्राप्त हो रही हैं। मुझे आशा है कि सफलता की कहानियों का यह सिलसिला लक्षित समय में प्रदेश को रसायनमुक्त करेगा। सिरमौर की इन कहानियों का प्रकाशन विशेष प्रसन्नता का विषय है। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस संकलन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

डॉ० अजय शर्मा

हिमाचल प्रदेश सरकार

राज्य परियोजना निदेशक
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले 3 वर्ष के छोटे से अन्तराल में 1,29,299 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

सिरमौर जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 8,000 करोड़ की फल–सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि–बागवानी लागत, किसान–बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल–सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक–फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल–सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक–फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती–बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश को रसायनमुक्त राज्य बनाने के लिए पूर्व राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी की ओर से 2016 से ही प्रयास शुरू हो गये थे। तत्पश्चात हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' एवं इनके दीर्घकालीन कल्याण हेतू फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान–बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारक संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 1,35,172 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं और 1,29,299 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

–प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 81 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 36,15 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

जिला सिरमौर - परिदृश्य

शिवालिक हिल में बसा सिरमौर जिला देशभर में लहसुन और अदरक की खेती के लिए प्रसिद्ध है। उत्तर में शिमला, पूर्व में उत्तराखंड और दक्षिण में हरियाणा के साथ लगते इस जिला के किसान – बागवान बहुत मेहनकश हैं। पारंपरिक खेती के साथ नई नकनीकों को सीखने और उन्हें अपने खेतों में उतारने वाले यहां के किसान अब खेती के साथ बागवानी की ओर बड़ी तेजी से रूख कर रहे हैं।

सिरमौर जिला का क्षेत्रफल 2,825 वर्ग किलोमीटर है। 9 तहसील व 5 उप तहसीलों में बंटे इस जिले में 6 विकास खंड पांवटा साहिब, संगड़ाह, पच्छाद, नाहन, शिलाई और राजगढ़ हैं।

सिरमौर जिला के किसान नकदी फसलों जैसे टमाटर, मटर, आलू, शिमला मिर्च और बीन के साथ पुराने अनाजों जैसे कोदा, कावणी, ढांखरी आलू, मक्की और जौ के पुराने बीजों को आज भी संजोए हुए हैं।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना को धरातल पर उतारने के लिए आतमा परियोजना के अधिकारियों के अथक प्रयासों का ही नतीजा है कि जिला के किसान बड़ी तेज गति से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को अपना रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
50,720

भाषा एवं बोलियां
हिन्दी, पंजाबी, सिरमौरी

आबादी
5,29,855

कुल क्षेत्रफल
2,24,759 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
74,889 हैक्टेयर

वर्ष 2021-22 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
2,000

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान (31 जुलाई 2021 तक)	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान (31 जुलाई 2021 तक)	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (हैक्टेयर में)
1	नाहन	7, 476	1,897	992	61.54
2	पांवटा साहिब	18,340	1, 450	1,121	96.86
3	शिलाई	6,766	4,048	650	97.3
4	संगड़ाह	7, 186	1,711	786	61.23
5	पच्छाद	5496	2,078	1, 461	88.2
6	राजगढ़	5, 456	1, 488	744	66.28
कुल योग		50,720	12,672	5,754	471.41

सफल प्राकृतिक खेती किसान

अर्जुन सिंह, गांव पराड़ा, विकास खण्ड नाहन। मो. 98052 – 74263

संदीप कुमार, गांव डाबरा, विकास खण्ड पांवटा साहिब। मो. 98162 – 93 296

जसविंदर कौर, गांव कांशीपुर, विकास खण्ड पांवटा साहिब। मो. 98164 – 40808

कमलेश कुमार, गांव रिटभ, विकास खण्ड राजगढ़। मो. 98165 – 71644

हरिंद्र ठाकुर, गांव पनार, विकास खण्ड नाहन। मो. 973 69 – 92658

दिलीप सिंह, गांव क्यारी, विकास खण्ड शिलाई। मो. 86288 – 62563

किशन सिंह, गांव मेहत, विकास खण्ड पांवटा साहिब। मो. 82787 – 47588

राजपाल, गांव कंटा, विकास खण्ड राजगढ । मो. 898821 – 13 13 3

पूर्णदेव ठाकुर, गांव सोडा ध्याड़ी, विकास खण्ड पच्छाद । मो. 98165 – 83 756

नीलम शर्मा, गांव नगाहां, विकास खण्ड पच्छाद । मो. 78768 – 50448

चमल लाल, गांव जेडांप विकास खण्ड संगड़ाह । मो. 98166 – 09763

नरोतम सिंह, गांव ढाकरांवाला, विकास खण्ड नाहन । मो. 94594 – 55864

चतर सिंह, गांव केरकावास, विकास खण्ड पांवटा साहिब । मो. 82197 – 5883 8

कौशल दत्त, गांव जजोहन विकास खण्ड पच्छाद । मो. 88942 – 76773

चत्तर सिंह, गांव कांडी, विकास खण्ड शिलाई । मो. 98057 – 8053 7

फार्मा कंपनी की नौकरी छोड़, 12 बीघा भूमि में खड़ा किया प्राकृतिक खेती मॉडल, लाखों की कर रहे कमाई

अर्जुन सिंह

आयुर्वेदा की पढ़ाई के बाद फार्मा कंपनी में 4 साल तक नौकरी कर रहे सिरमौर के युवा को मिट्टी की महक दूर नहीं रख पाई। फार्मा में जमी जमाई नौकरी छोड़कर कृषि–बागवानी में जुटे सिरमौर के पराड़ा गांव के किसान अर्जुन सिंह ने 12 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती का एक ऐसा उत्कृष्ट मॉडल खड़ा किया है, जिसे देखकर अन्य किसान भी इसे अपना रहे हैं। अर्जुन सिंह के खेती मॉडल को देखकर अभी तक क्षेत्र के 200 से अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपना लिया है। हिमाचल प्रदेश में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना की परिकल्पना के बाद सबसे पहले जुड़ने वाले किसानों में से एक अर्जुन सिंह 2018 से ही प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। नौणी विश्वविद्यालय और कुफरी से प्रशिक्षण पाने के बाद अर्जुन सिंह ने अपनी 12 बीघा भूमि में इसे करना शुरू किया और पिछले तीन सालों में खेती के साथ अब सेब बागवानी में भी प्राकृतिक खेती को अपनाकर अपनी आजीविका चला रहे हैं।

नेहरू युवा केंद्र से जुड़े हुए होने के चलते अर्जुन सिंह केंद्र की ओर से युवाओं के लिए आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में प्राकृतिक खेती पर विशेष व्याख्यान देते हैं और उन्हें इस खेती विधि को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

अर्जुन सिंह ने बताया कि उनके क्षेत्र में आयुष विभाग की ओर से आयुष ग्राम परियोजना का भी कार्यान्वयन किया जा रहा है। इस परियोजना में भी वे लोगों को औषधीय पौधों को प्राकृतिक खेती विधि से उगाने के बारे में प्रशिक्षण देते हैं।

अर्जुन सिंह ने अपने खेतों में शिमला मिर्च, टमाटर, लहसुन, मक्की, बीन, राजमाश के साथ अब सेब, आढू, स्ट्रोबेरी और प्लम लगाया है। उन्होंने बताया कि उनके खेतों में अब बीमारियों का प्रकोप बहुत कम है। अर्जुन का कहना है कि गांव के लोगों ने भी इस खेती विधि को अपनाना शुरू कर दिया है और गांव के सभी लोग इसे कर रहे हैं।

अर्जुन का कहते हैं कि अभी बाजार में प्राकृतिक और रसायनिक उत्पादों के लिए एक जैसे दाम मिल रहे हैं, इसके लिए हमने 'आपका फैमिली फार्मर' के नाम से एक किसान उत्पाद कंपनी बनाई है। इस कंपनी में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के उत्पादों को बाजार मुहैया करवाया जाता है।

> **"प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की कृषि लागत में बहुत कमी आई है और अब उनका मुनाफा कई गुणा बढ़ गया है। सही विपणन की सुविधा मिलने से किसानों की आमदनी में और अधिक बढ़ोतरी होगी।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 12 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 12 बीघा

फसलें व फल: शिमला मिर्च, टमाटर, लहसुन, मक्की, बीन, राजमाश, सेब, आढू, स्ट्रोबेरी और प्लम

रसायनिक खेती में: व्यय - 1,00,000 आय - 4,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 15,000 आय - 6,00,000

28 बीघा में बिना रसायनों के प्रयोग किए, प्राकृतिक खेती कर रहे संदीप कुमार

संदीप कुमार

कृषि से अपनी साल भर की आजीविका चलाने वाले सिरमौर के पांवटा साहिब के किसान संदीप कुमार ने बिना रसायनों के प्रयोग के अपनी 28 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती का सफल मॉडल खड़ा किया है। बोकला पाब पंचायत के निवासी संदीप कुमार के सफल मॉडल को देखने के लिए न सिर्फ प्रदेश के बल्कि दूसरे राज्यों के किसान और कृषि अधिकारी आ रहे हैं। वर्ष 2018 में पद्मश्री सुभाष पालेकर से छह दिन का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद 2 बीघा भूमि से प्राकृतिक खेती की शुरूआत करने वाले संदीप कुमार का भरोसा इस खेती के प्रति इतना बढ़ गया है कि अब खेती के साथ बागवानी में भी इसे अपना रहे हैं।

संदीप कुमार ने बताया कि जब मैं प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद घर आया और प्राकृतिक खेती को शुरू किया तो गांववालों ने मेरा बहुत मजाक उड़ाया। लेकिन मेरी लहलहाती फसलों और बाद में उत्पादन को देखकर लोगों को हैरानी हुई। उन्होंने बताया कि लहसुन हमारी मुख्य फसल है और इसमें मुझे बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले। जिसके चलते जहां पहले मेरा लहसुन 110 रूपये तक बिक रहा था, वह अच्छी गुणवत्ता के कारण 135 रूपये प्रतिकिलो के हिसाब से बिका। संदीप के मॉडल को देखने के लिए हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों से किसान पहुंच रहे हैं और इसके अलावा उत्तराखंड राज्य के संयुक्त निदेशक (कृषि)की अध्यक्षता में भी एक टीम ने इनके खेतों का दौरा किया।

संदीप कुमार ने कृषि के साथ बागवानी में भी प्राकृतिक खेती का प्रयोग शुरू किया है। उन्होंने अपनी साढ़े 7

बीघा भूमि में किवी के 180 पौधे लगाए हैं। इसके अलावा वे अब 200 पौधे प्लम के लगाने की तैयारी कर रहे हैं। संदीप ने बताया कि दिल्ली की कई कंपनियां उनके साथ संपर्क में हैं और वे उनके प्राकृतिक उत्पादों को खरीदने के लिए तैयार हैं।

संदीप का कहना है कि वे अपने क्षेत्र का रसायनमुक्त करना चाहते हैं, इसलिए वे किसानों को एक–फसलीय प्रणाली से निकालकर बहु–फसलीय प्रणाली की ओर ले जाने के लिए प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दे रहे हैं। संदीप किसानों को बताते हैं कि कैसे उन्होंने अपनी आय को दो सालों के भीतर 5 लाख से 7 लाख तक और अपनी लागत को 50 हजार रूपये से 4 हजार रूपये तक पहुंचाया।

> **"प्राकृतिक खेती में लागत तो कम होती ही है, साथ ही आय में भी वृद्धि होती है, ऐसे में बिना किसी विशेष बाजार के भी किसानों का लाभ सुनिश्चित होता है।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 28 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 28 बीघा

फसलें व फल: शिमला मिर्च, राजमाह, टमाटर, फ्रासबीन, अदरक, लहसुन, मटर

रसायनिक खेती में: व्यय - 50,000 आय - 5,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 4,000 आय - 7,00,000

पति से लड़कर शुरू की प्राकृतिक खेती, परिणाम देखकर मिल रहा पूरे परिवार का सहयोग

जसविंदर कौर

वर्ष 2018 में पांवटा साहिब की जसविंदर कौर ने जब खेती में बढ़ते खर्च को कम करने के लिए प्राकृतिक खेती की शुरूआत की तो उन्हें अपने पति के गुस्से का शिकार होना पड़ा। जसविंदर कौर के पति रणजीत सिंह का गुस्सा इतना था कि जितनी बार जसविंदर खेती के लिए देसी गाय के गोबर और गोमूत्र को जीवामृत बनाने के लिए एकत्रित करती वे इसे फैंक देते थे। इसके बावजूद जसविंदर कौर डटी रही और उन्होंने अपने पति को एक फसल में इसके प्रयोग के लिए तैयार कर लिया, साथ ही उन्हें भी 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' का प्रशिक्षण दिलवाया। प्रशिक्षण पाने और पहली फसल में उत्पादन के परिणामों को देखकर रणजीत सिंह हैरान रह गए, और अब वह भी अपनी पत्नी जसविंदर कौर के साथ सफलतापूर्वक प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

जसविंदर कौर बताती है कि जब उन्होंने इस खेती विधि को शुरू किया था तो परिवार के विरोध के साथ उन्हें अपने गांववालों से भी बहुत कुछ सुनने को मिला लेकिन मेरे खेतों में परिणाम देखने के बाद सबके मुंह बंद हो गए और अब लोग इस खेती विधि को अपना रहे हैं।

जसविंदर का कहना है कि दो साल पहले हमने जो खेत प्राकृतिक खेती विधि से तैयार किए थे वे अब बंटवारे

के बाद बड़े भाई के हिस्से में चले गए हैं और हमारे हिस्से में नए गांव में जमीन आई है। हमने अब भूमि के इस टुकड़े में भी प्राकृतिक खेती विधि का 20 तरह के फल और फसलों में प्रयोग शुरू किया है। जिसके अच्छे शुरूआती परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

> **यह खेती विधि हर तरह के फल व फसलों के लिए लाभदायक है।**
> **इसमें पहले ही साल में किसान-बागवानों को चमत्कारिक परिणाम देखने को मिलते हैं।**

जसविंदर कौर के खेती मॉडल को देखकर गांव के प्रधान सहित 35 लोगों ने प्राकृतिक खेती को अपनाना शुरू कर दिया है। वहीं जसविंदर अब गांव के साथ आस–पास के 12 गावों में लोगों को कृषि विभाग की आत्मा टीम के साथ मिलकर प्राकृतिक खेती सिखा रही हैं।

जसविंदर कौर के पति रणजीत सिंह का कहना है कि यह खेती विधि किसानों के लिए हर मायने में लाभदायक है। इसमें किसानों को पोषणयुक्त सुरक्षित भोजन तो मिलता ही है साथ ही कृषि लागत कम होने से उनकी आय में भी वृद्धि होती है।

> **प्राकृतिक खेती के बारे में पता नहीं था लेकिन खेतों में**
> **इसके परिणाम देखकर पूरी तरह आश्वस्त हूं कि यह सबसे उत्तम खेती विधि है। -रणजीत सिंह**

प्राकृतिक खेती का ऐसा जनून, 36 बीघा में लगे पुराने बागीचे को उखाड़कर अब प्राकृतिक विधि से तैयार किया नया बागीचा

कमलेश कुमार

इसे प्राकृतिक खेती का जनून ही कहेंगे कि राजगढ़ के बागवान कमलेश कुमार ने अपने 36 बीघा के बागीचे को पूरी तरह उखाड़कर इसमें प्राकृतिक विधि से बागवानी करने के लिए नए पौधे लगाए हैं। राजगढ़ ब्लॉक के रिटभ क्षेत्र के बागवान कमलेश कुमार का नाम क्षेत्र के बड़े बागवानों में आता है। कमलेश कुमार कई दशकों से सेब बागवानी कर रहे थे लेकिन बागवानी में लगातार बढ़ रही बीमारियों और खर्च से तंग आकर उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। कमलेश ने पहले इस खेती विधि का प्रशिक्षण लिया और इसके बाद इसको अपने खेतों में प्रयोग के तौर पर शुरू किया। प्रयोग के दौरान उन्होंने जो परिणाम देखे इससे उनका प्राकृतिक खेती विधि के प्रति पूरी तरह विश्वास हो गया।

बागवानी में नई सेब की नई किस्मों को अपने बागीचे में तैयार करने के शौकीन कमलेश के दिल में प्राकृतिक खेती की ऐसी धुन बैठी कि उन्होंने अपने पुराने बागीचे को उखाड़कर अब नया बागीचा तैयार करना शुरू किया है। कमलेश ने अपने 36 बीघा के बागीचे में से एक प्लाट में सेब के 1000 पौधे हाई–डैंसिटी प्लांटेशन के माध्यम से लगाए हैं। उनका कहना है कि दूसरे साल ही उन्हें सैंपल मिलना शुरू हो गया है और तीसरे साल से कमाई होना शुरू हो जाएगी।

कमलेश कुमार के खेती और बागवानी में प्राकृतिक खेती के प्रयोगों को देखने के लिए हिमाचल के भूतपूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत दो बार उनके घर और बागीचे में जा चुके हैं। कमलेश कुमार बताते हैं कि भूतपूर्व

राज्यपाल के मार्गदर्शन में ही उन्होंने इस खेती विधि को अपनाया था और इसके बेहतर परिणाम मिलने के बाद अब क्षेत्र के 100 से अधिक किसान–बागवान मुझसे जुड़े गए हैं।

कमलेश कुमार ने बताया कि जब उन्होंने इस खेती विधि को अपनाया था तो उनके पास देसी गाय नहीं थी, वे लोगों से गोमूत्र और गोबर खरीदकर लाते थे और प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग अपने खेतों में करते थे। लेकिन अब मैंने अपनी देसी गाय ले ली है और इसके लिए मुझे प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत अनुदान भी प्राप्त हुआ है। कमलेश ने बताया कि जब वे रसायनिक खेती करते थे तो उनका खर्चा 2 लाख रूपये प्रतिवर्ष तक पहुंच गया था लेकिन अब यही खर्चा 5 हजार रूपये तक सीमित हो गया है।

> **“यह खेती विधि न सिर्फ किसानों के हित के लिए है, बल्कि इससे मिट्टी की गुणवत्ता भी बरकार रहती है और मानव स्वास्थ्य, वनस्पति और पर्यावरण पर भी किसी प्रकार के विपरीत प्रभाव नहीं पड़ते हैं।”**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 20 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 20 बीघा

फसलें व फल: सेब, राजमाह, मटर

रसायनिक खेती में: व्यय - 30,000 आय - 3,70,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 14,000 आय - 4,00,000

एमबीए के बाद कंपनी में काम करने के बजाए थामी खेती की डोर, किसानों को कम लागत में अच्छी पैदावार के सिखा रहे गुर

हरिंद्र ठाकुर

नामी संस्थान से पहले बीसीए और बाद में एमबीए करने के बाद सिरमौर के नाहन ब्लॉक के युवा हरिंद्र ठाकुर किसानों को कम लागत में अच्छी पैदावार लेने के गुर सिखाने का काम कर रहे हैं। नाहन ब्लॉक के पनार गांव के हरिंद्र ठाकुर अभी तक अपने गांव और आस–पास के इलाकों के 100 से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ चुके हैं। महिलाओं में पोषण की कमी को देखते हुए हरिंद्र ने महिलाओं के समूहों को पोषणयुक्त प्राकृतिक खेती के मॉडल खड़ा करने का बीड़ा उठाया है। इसके लिए वे महिला समूहों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दे रहे हैं ताकि वे अपनी क्यारी या छोटी सी बगिया में औषधीय गुणों और पोषण से भरपूर स्थानीय मसाले और सब्जियां उगा सकें। इस खेती विधि के बारे में लोगों को जागरूक करने से पहले हरिंद्र ने पहले तो नौणी विश्वविद्यालय में एक माह का प्रशिक्षण लिया और इसके बाद इस खेती मॉडल को देखने के लिए उन्होंने झांसी महाराष्ट्र की भी यात्रा कर अनुभव प्राप्त किया।

हरिंद्र ठाकुर का कहना है कि वे अपने संयुक्त परिवार के साथ 50 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। शुरूआत में अनुभव की कमी के चलते उन्हें थोड़ा नुकसान उठाना पड़ा लेकिन अब उनकी बहुत अच्छी पैदावार हो रही है। हरिंद्र का कहना है कि शुरूआत में मैंने जो गलतियां की उन्हें कोई और न दोहराए इसलिए मैं लोगों को प्राकृतिक खेती के बारे में प्रशिक्षण देता हूं।

हरिंद्र बताते हैं कि पढ़ाई पूरी करने के बाद जब मैंने खेती करने का फैसला लिया तो मुझे परिवार वालों के विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन जब मैनें प्राकृतिक खेती विधि से खेती करने का फैसला लिया तो मुझे

परिवार के साथ गांव वालों की बातें भी सुनने को मिली। जब शुरूआत में मैं जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग करता था, तो लोग मेरे उपर हंसते थे, लेकिन जब इसके परिणाम लहसुन, अदरक और मक्की में देखने को मिले तो आज वही लोग इस खेती विधि को अपना रहे हैं।

हरिंद्र ठाकुर ने अपने खेतों में अब पहले से प्रचलित खेती के साथ केसर की खेती करने की भी नई शुरूआत की है। उनका कहना है कि अभी पहले साल में उन्हें अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं और लोग भी इसके परिणामों को देखने के लिए उत्सुक हैं।

> **"प्राकृतिक खेती विधि में पहले ही साल में हमें अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। इस खेती विधि में पहले से ही थोड़ा सतर्क रहने की जरूरत रहती है इसलिए किसान-बागवानों को खेतों की लगातार निगरानी रखनी चाहिए और किसी समस्या के आने पर तुरंत प्राकृतिक विधि से बताए आदानों का प्रयोग तय मात्रा और सारणी के अनुसार करना चाहिए।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 48 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 48 बीघा

फसलें व फल: मक्की, गन्ना, उड़द, बीन, अदरक

रसायनिक खेती में: व्यय - 40,000 आय - 3,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 3,000 आय - 4,00,000

दो वर्षों में ही प्राकृतिक खेती से 3 से 5 लाख तक पहुंची आय

दिलीप सिंह

सिरमौर जिला की दूर–दराज की पंचायतों प्राकृतिक खेती की पहुंच से किसानों की आय में बढ़ोतरी देखी जा रही है। शिलाई ब्लॉक के क्यारी गांव के किसान दिलीप सिंह ने प्राकृतिक खेती से दो ही सालों में अपनी आय को 2 लाख रूपये तक बढ़ाया है। तीन साल पहले पदम्श्री सुभाष पालेकर से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पाने के बाद दिलीप सिंह ने अपनी 2 बीघा भूमि से इस खेती विधि की शुरूआत की थी। आज दिलीप अपनी 10 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से सफलतापूर्वक लहसुन, मक्की, गोभी, शिमला मिर्च और टमाटर की खेती कर रहे हैं। दिलीप सिंह का कहना है कि जब वे इस खेती विधि का प्रशिक्षण लेकर गांव लौटे और इसे अपने खेतों में कर रहे थे, तो गांव वाले उनका मजाक बना रहे थे। लोगों का मानना था कि इन खेतों को रसायनों की आदत पड़ गई है और इनमें बिना रसायनों के खेती नहीं हो सकती। लेकिन मैंने इस विधि को सही से अपनाकर लोगों को गलत साबित कर दिया और आज वो ही लोग अपने खेतों में भी इसे अपना रहे हैं।

दिलीप सिंह का कहना है कि पहले मैं रसायनिक खेती करता था और इसमें मेरा 20 हजार रूपये का खर्चा आ रहा था, लेकिन अब खर्चा केवल गुड़ और बेसन का रह गया है। उन्होंने बताया कि हर साल मेरे खेतों में बीमारियों का प्रकोप रहता था। अब जब से प्राकृतिक खेती कर रहा हूं तब से बीमारियां कम हैं।

दिलीप सिंह का कहना है कि प्राकृतिक खेती में एक साथ बहुत सारी फसलें लगाने से मेरा मुनाफा अब बहुत

बढ़ गया है। अगर कभी एक फसल के दाम मंडी में सही न मिले तो दूसरी फसल उसकी भरपाई कर देती है। इससे मेरा नुकसान होने का डर भी खत्म हो गया है। दिलीप सिंह अभी तब अपने आस–पास की पंचायतों के 700 से अधिक लोगों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दे चुके हैं।

क्यारी पंचायत के ही दो युवा किसानों आत्माराम और विचित्र ने बताया कि हमने दिलीप सिंह के खेतों में प्राकृतिक खेती के कमाल को देखकर इस खेती विधि अपने खेतों में करना शुरू किया है। इससे हमारे खेती उत्पादों की गुणवत्ता बहुत अच्छी हो गई है और हमारी कृषि लागत भी कम हो गई है।

> **"जो लोग मुझे प्राकृतिक खेती करता देखकर हंसते थे आज वे ही मेरे खेतों में लहलहाती फसलों को देखकर इसे अपना रहे हैं। जो भी किसान मेरे खेतों में आता है मैं उन्हें इस खेती विधि के बारे में विस्तार से जानकारी देता हूं, ताकि वे भी इसे अपना सके।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 10 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 10 बीघा

फसलें व फल: लहसुन, अदरक, फूल गोभी, मटर, आलू, टमाटर, मक्की, गेहूं, फ्रासबीन

रसायनिक खेती में: व्यय - 20,000 आय - 3,50,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 2,000 आय - 5,00,000

जिन पौधों में पांच सालों से नहीं आ रहे थे फल, उनमें इस विधि ने लाए फल

किशन सिंह

प्राकृतिक खेती किसान किशन सिंह प्राकृतिक खेती को चमत्कारिक खेती कहते हैं। सिरमौर के मेहत गांव के किसान किशन सिंह बताते हैं कि उनके पास 35 नींबू के पौधे हैं, जिनमें पिछले 5 सालों से बिल्कुल भी फल नहीं आ रहे थे। किशन सिंह ने प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेने के बाद खेतों के साथ अपने नींबू के पौधों में भी जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग किया। इससे मेरे नींबू के पौधे में फूल आ गए और इसके बाद से नींबू की भरपूर फसल मिलना शुरू हो गई। संयुक्त परिवार में पले–बढ़े किशन सिंह बताते हैं कि उनके पास 30 बीघा भूमि है और इसमें वे अपने गुजारे लायक ही खेती करते थे। वे बताते हैं कि उनके परिवार से कोई भी नौकरी में नहीं है। इसलिए तीनों भाई खेतों में मेहनत करके अपना पालन पोषण कर रहे थे। ऐसे में जब मैं प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण करके लौटा तो इसे पूरी खेती में करने से डर रहा था क्योंकि साल भर की आजीविका पर असर पड़ने का भी डर था।

> "खेती मेरे परिवार की जिविका का आधार है इसलिए नया प्रयोग करने से कतरा रहा था लेकिन कृषि अधिकारियों के सहयोग और मार्गदर्शन में इस विधि को अपनाया। प्राकृतिक खेती के परिणामों से मेरा परिवार ही नहीं आस-पास वाले भी आश्चर्यचकित हैं।"

हम सभी भाईयों ने पहले 5 बीघा में प्राकृतिक खेती विधि को परीक्षण के तौर पर शुरू किया, लेकिन अच्छे

परिणाम नहीं मिले। इसके बाद हमने दूसरी फसल में विधि को सही से अपनाया और इसके बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले। किशन बताते हैं कि पारम्परिक खेती के मुकाबले मेरा मुनाफा तीन गुणा बढ़ गया है। किशन ने अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिए अब बागवानी की ओर भी रूख किया है। उन्होंने चंदन, सेब, नींबू, अनार, गलगल के पौधे भी लगाए हैं, ताकि बागवानी से भी आय हो सके। प्राकृतिक विधि से उगाए जा रहे इन सभी पौधों की अच्छे से बढ़वार हो रही है और कई पौधों में तो अब फल भी आना शुरू हो गए हैं।

किशन बताते हैं कि अब उन्होंने अपने साथ अपने पूरे गांव के किसानों को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने बताया कि उनके गांव में 200 के करीब परिवार हैं और ये सभी परिवार अपनी भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

> **“हम अपने पूरे धारटीधार क्षेत्र और सिरमौर को प्राकृतिक खेती के तहत लाने के लिए प्रयासरत हैं। किसान इस खेती विधि के परिणामों से बहुत खुश है और इससे उनकी आय में बढ़ोतरी हो रही है।”**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 8 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 8 बीघा

फसलें व फल: अदरक, राजमाह, मक्की, उड़द, लहसुन, गेहूं, मटर, प्याज, फ्रासबीन

रसायनिक खेती में: व्यय-16,000 आय-1,50,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय-1,000 आय-3,00,000

प्राकृतिक खेती की ऐसी धुन कि लोगों ने नाम ही रख दिया 'जीवामृत'

राजपाल

राजपाल सिरमौर जिला के राजगढ़ ब्लॉक के किसान हैं और इनकी प्राकृतिक खेती के प्रति धुन को देखते हुए गांव के अन्य किसानों ने इनका नाम ही जीवामृत रख दिया है। राजपाल 7 बीघा में खेती और बागवानी करते हैं और इसी भूमि से अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। राजपाल ने इस 7 बीघा भूमि में एक ऐसा खेती मॉडल खड़ा किया है, जिसमें उन्हें कम लागत में मिश्रित खेती की वजह से थोड़े–थोड़े सयम में आय होती रहती है। राजपाल बताते हैं कि उन्होंने खेती में बढ़ती लागत से तंग आकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसे करना शुरू किया। उन्होंने बताया कि जब वे इस खेती विधि का प्रशिक्षण लेकर लौटे तो वे बहुत उत्साहित थे और अपने साथी किसानों को भी इस खेती विधि के बारे में हमेशा बताते रहते थे। इसी की वजह से लोगों ने मेरा नाम जीवामृत रख दिया।

राजपाल ने न केवल खेती का उत्तम मॉडल खड़ा किया है, बल्कि वे अपने उत्पादों का विपणन भी तकनीक के सहारे बहुत अच्छी तरह कर रहे हैं। राजपाल ने बताया कि वे आडू की बागवानी करते हैं और उनके बागीचे के सारे आडू मुंबई, लुधियाना और चंडीगढ़ में जाते हैं। इसके लिए उन्हें किसी आढ़ती के चंगुल में फंसना नहीं पड़ता। वहीं सब्जियों को भी वे चंडीगढ़ स्थित उनके रेगुलर खरीददारों तक पहुंचाते हैं। वे बताते

हैं कि इस बार उन्होंने अपने आड़ू को 100 रूपये प्रति किलो के हिसाब से बेचा जबकि स्थानीय मंडियों में 70 रूपये प्रति किलो से अधिक का भाव नहीं मिला।

राजपाल को 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत देसी गाय, संसाधन भंडार और ड्रम के लिए अनुदान दिया गया है। इनकी सहायता से राजपाल न सिर्फ अपने लिए प्राकृतिक खेती के आदान बना रहे हैं, बल्कि अपने आस–पास के किसान–बागवानों को भी प्राकृतिक खेती आदान मुहैया करवा रहे हैं। राजपाल बताते हैं कि प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद उनकी कृषि लागत अब बहुत कम हो गई है। इसे और कम करने के लिए अब राजपाल अपने बीजों को रख रहे हैं ताकि बीजों में होने वाले खर्चे को कम किया जा सके।

> **"पहले हमारे खेतों में उगने वाली फसलों में बहुत सी बीमारियां होती थी, जिनसे निपटने के लिए मुझे हजारों रूपये की दवाईयों को प्रयोग करना पड़ता था, लेकिन जब से 'प्राकृतिक खेती' को अपनाया है तब से फसलों की सेहत में सुधार है और बीमारियां बहुत कम हैं।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 7 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 7 बीघा

फसलें व फल: मटर, टमाटर, बीन, शिमला मिर्च, आड़ू

रसायनिक खेती में: व्यय - 20,000 आय - 1,25,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 15,000 आय - 1,50,000

प्राकृतिक खेती ने दिलवाई कर्ज से मुक्ति

पूर्णदेव ठाकुर

किसानों को कर्जमुक्त कर उनकी आय को बढ़ाकर दोगुना करने के लिए प्रदेश में शुरू की गई 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के परिणाम धीरे–धीरे सामने आ रहे हैं। प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले सिरमौर जिला के किसान पूर्णदेव ठाकुर ने इस खेती विधि को अपनाने के पहले ही वर्ष न केवल अपने मुनाफे में दोगुणा बढ़ोतरी की है बल्कि कर्ज से भी मुक्ति पाई है। पूर्णदेव ठाकुर सिरमौर के सोडा ध्याड़ी गांव के युवा किसान हैं और खेती–बाड़ी करके अपने परिवार का गुजर बसर करते हैं। पिता की बीमारी के बाद नामी कंपनी से नौकरी छोड़ खेती करने लौटे पूर्णदेव 3 साल पहले तक खेतों में बेहतर पैदावार लेने के लिए हर साल कीटनाशकों, खादों और फफूंदनाशकों पर हजारों रुपए खर्च करते थे। जिसके चलते इनके उपर हर साल कर्ज चढ़ जाता था। लेकिन इसके बाद उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाने के पहले ही सीजन में इन मंहगे रसायनों पर होने वाले खर्च को खत्म कर अपने उपर पड़ने वाले कर्ज के बोझ को हमेशा के लिए खत्म कर अपने मुनाफे को दोगुना कर लिया है। पूर्णदेव के साथ उनके छोटे भाई तेजेंद्र सिंह भी खेती में उनका हाथ बंटा रहे हैं। दोनों भाई प्राकृतिक खेती विधि से फल और सब्जियों की पैदावार कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले पूर्णदेव ठाकुर हिसाब किताब के पूरे पक्के हैं और खेती में प्रयोग होने वाले छोटे से लेकर बड़े हर खर्चे को अपनी डायरी में लिखते हैं। ठाकुर ने बताया कि जब वे रसायनिक खेती कर

रहे थे तो 2017 में उनका खर्च 60 हजार था, जो अब 5000 रूपये रह गया है।

पूर्णदेव ने बताया कि प्राकृतिक खेती विधि से न सिर्फ उनकी खेती लागत कम हुई है, बल्कि घर में उनके पिता जी के लिए हर माह आने वाली 5 हजार रूपये की दवाई भी बंद हो गई है। उन्होंने कहा कि जब से मैं प्राकृतिक खेती के उत्पाद उन्हें खिला रहा हूं तब से दवाईयां पूरी तरह से बंद हैं और हम बाजार से कोई भी सब्जी नहीं खरीदते हैं।

पूर्णदेव ठाकुर सिरमौर जिला के साथ प्रदेश के अन्य किसानों के लिए मिसाल बनकर उभरे हैं। पूर्णदेव ठाकुर के खेती में सफल प्रयोग को देखकर कई किसान उनके खेतों में पहुंच रहे हैं। वहीं पूर्णदेव ठाकुर भी इन किसानों को प्राकृतिक खेती विधि अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित कर रहे हैं। पूर्णदेव इस खेती विधि से एक बीघा खेत में एक ऐसा मॉडल खड़ा कर रहे हैं जिससे सालाना 5 लाख रूपये की कमाई होगी।

> **"जब मैंने इस खेती विधि को अपनाया तो मुझे अपने परिवार के विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन जैसे मुझे अच्छे परिणाम मिले तो अब मेरे परिवार के साथ गांव वाले भी इस खेती विधि को अपना रहे हैं।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 10 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 10 बीघा

फसलें व फल: - गोभी, टमाटर, फ्रासबीन, शिमला मिर्च, मक्की, राजमाश

रसायनिक खेती में: व्यय - 60,000 आय - 4,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 5,000 आय - 4,00,000

खेती के लिए खाद और दवाई की जरूरत का मिथक तोड़ किसानों को साथ जोड़ रही नीलम

नीलम शर्मा

सिरमौर जिला के नगाहां गांव की महिला किसान नीलम शर्मा ने किसान समुदाय में खाद दवाई के बिना उत्पादन न होने के प्रचलित मिथक को तोड़ जहां खेती के नए विकल्प को थामा, वहीं अपने आस–पास के अन्य किसानों को भी रसायनरहित खेती से जोड़ा। खाद और कीटनाशक के प्रयोग को बंद कर प्राकृतिक विधि की तरफ मुड़ी यह महिला किसान अब क्षेत्र में इस खेती की सूत्रधार बनकर उभरी है।

वर्षों से रसायनिक खेती करने के बाद नीलम ने जैविक खेती के विकल्प को भी अपनाया और कुछ साल इस विधि से भी खेती की। इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि पौधे की बढ़वार और फसल सुरक्षा के लिए मिल रहे जैविक खेती आदान बहुत महंगे हैं। खेती लागत को कम करने के लिए रास्ता तलाश कर रही नीलम शर्मा ने 2018 में पंचायत में लगे दो दिवसीय शिविर से प्राकृतिक खेती के बारे में जाना और अपने खेतों में ट्रायल करने लगी।

प्राकृतिक खेती के सिद्धांत को अच्छे से समझने के लिए उन्होंने 2019 में नौणी विश्वविद्यालय में एक सप्ताह का प्रशिक्षण लिया और उसके बाद पूरे आत्मविश्वास के साथ इस खेती को जारी रखा। पहले साल में उन्हें जमीन में खास सुधार नजर नहीं आया, मगर दूसरे साल मिट्टी की गुणवत्ता सुधरी और उत्पादन भी बेहतर हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि जो बीमारियां रसायनिक और जैविक खेती के दौरान हर साल आती थी इस विधि से वह नहीं आई।

नीलम ने बताया कि उनका क्षेत्र सूखाग्रस्त है और बिना पानी के फसलें अक्सर सूख जाती थीं, लेकिन प्राकृतिक विधि अपनाने के बाद अब पौधे सूखे की स्थिति को भी झेल जाते हैं। वह कहती हैं कि प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद खाद और कीटनाशक पर लगने वाले 60 हजार रूपए की बचत हो रही है और उससे वह मशरूम उत्पादन कर रही हैं।

प्राकृतिक खेती आदान बनाने के लिए वह अपने पड़ोस से गोबर और गोमूत्र लेती हैं और विभिन्न आदान बनाकर खेतों में प्रयोग करती हैं। गुड़ के लिए उन्होंने गन्ना लगाया है और बेसन के लिए दलहनी फसलें लगाई हैं जिससे खेती खर्च न्यूनतम हो गया है। 10 बीघा भूमि पर खेती कर रही नीलम शर्मा पंचायत के महिला समूह की सदस्य हैं और सूमह की बैठकों में प्राकृतिक खेती के बारे में बताती हैं। समूह की 6 महिला किसान उनके मार्गदर्शन में प्राकृतिक खेती अपना चुकी हैं।

> **"पहले परिवारवाले तथा आसपास के लोग कहते थे कि खेतों को खाद और कीटनाशक की आदत हो गई है और इनके बिना खेती संभव नहीं। प्राकृतिक खेती ने इस बात को गलत साबित कर दिया है। अब साथी किसान मेरे खेतों में आते हैं और यह विधि सीखने की इच्छा जताते हैं।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 20 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 10 बीघा

फसलें व फल: टमाटर, अदरक, लहसुन, शिमला मिर्च, लौकी, गेहूं, बैंगन, सरसों, प्याज, गन्ना, गौभी

रसायनिक खेती में: व्यय - 40,000 आय - 2,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 3,000 आय - 2,50,000

25 दिन देरी से की बिजाई फिर भी बंपर फसल पाई

चमल लाल

चमल लाल हरिपुरधार के साथ सटे गांव जेडांप के युवा किसान हैं। कंप्यूटर और उर्दू में डिप्लोमा करने के बाद तीन वर्षों तक निजी कंपनी में सेवाएं देने वाले चमन लाल रसायनिक खेती में बढ़ती रसायनों की लगातार बढ़ती मांग से तंग आ चुके थे। इसलिए चमन लाल ने प्राकृतिक खेती की ओर रूख किया और इसका अक्तूबर 2018 में कुफरी में प्रशिक्षण लिया। जब तक चमन लाल प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेकर लौटे गेहूं की बिजाई के लिए 25 दिन की देरी हो चुकी थी। लेकिन प्रशिक्षण पाने के बाद चमन इतने उत्साहित थे कि उन्होंने देरी होने और क्षेत्र में पाला पड़ने की समस्या के बावजूद प्राकृतिक खेती विधि से गेहूं की बिजाई कर दी।

चमन लाल ने बताया कि मेरे पिता जी वर्षों से खेती कर रहे हैं और उन्हें जब पता चला कि मैं इतने लेट गेहूं की बिजाई कर रहा हूं तो उन्होंने मुझे बहुत रोका कि हमारे यहां बहुत पाला पड़ता है और यहां पर अक्तूबर के पहले सप्ताह में ही बिजाई की जाती है। तो क्यों अपनी मेहनत और बीज को बर्बाद कर रहा है। चमन लाल ने अपने पिता की एक न सुनी और प्रशिक्षण में बताई हुई विधि के अनुसार डेढ़ बीघा में खेती शुरू कर दी। चमन बताते हैं कि बिजाई के बाद मेरे खेतों में बहुत अच्छी पैदावार हुई और जिन किसानों ने मुझसे 25 दिन पहले बिजाई की थी, मुझे भी उनके बराबर ही उपज मिली। उन्होंने बताया कि मैंने 35 किलोग्राम बीज लगाया था, जिससे मुझे 250 किलोग्राम पैदावावर मिली। मेरी पैदावार को देखकर गांव के अन्य लोग भी प्रभावित हुए

और नाराज पिता की नाराजगी भी दूर हो गई।

पहली ही फसल में सफलता पाने के बाद चमन लाल ने अगले ही वर्ष अपनी पूरी 6 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती शुरू कर दी। अब चमन लाल अपने गांव के 30 लोगों को इस खेती विधि से जोड़ चुके हैं और इनमें से 10 लोगों ने इसे पूरी तरह अपना लिया है। चमन लाल अब कृषि के साथ बागवानी में भी प्राकृतिक खेती विधि का ट्रायल लगा चुके हैं। उन्होंने सेब के 100 पौधे लगाए हैं और उनका कहना है कि पौधों की बहुत अच्छी बढ़वार हो रही है।

> **"प्राकृतिक खेती विधि में मुझे आश्चर्यचकित करने वाले परिणाम देखने को मिले हैं। मैंने अपने खेतों में प्राकृतिक खेती के मॉडल को अन्य किसानों को भी दिखाया है। जिससे वे भी प्रभावित होकर इसे अपनाने के लिए तैयार हैं।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 6 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 6 बीघा

फसलें व फल: मक्की, लहसुन, फ्रासबीन, मटर, अदरक

रसायनिक खेती में: व्यय - 10,000 आय - 1,20,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 3,000 आय - 1,50,000

मिट्टी इतनी नर्म की अब साल में एक ही बार करते हैं खेतों की जोताई

नरोत्तम सिंह

सिरमौर के नाहन ब्लॉक के किसान ने खेती का ऐसा मॉडल खड़ा किया है जिसमें किसानों को बार–बार जोताई करने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। वर्ष 2018 में प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण लेने के बाद इस विधि को अपनाने वाले नरोत्तम सिंह के खेतों की मिट्टी इतनी नर्म हो गई है कि अब मे ंसाल में सिर्फ एक बार ही जोताई करते हैं। 10 बीघा भूमि में कृषि–बागवानी करने वाले नरोत्तम सिंह बताते हैं कि खेतों में जीवामृत और घनजीवामृत के लगातार प्रयोग से मिट्टी बिल्कुल नर्म हो गई है। जिसकी वजह से उन्हें बार–बार हल नहीं चलाना पड़ता है। वे बताते हैं कि इससे उनका मजदूरी पर होने वाला खर्च तो कम हुआ है, साथ ही समय की भी बचत हुई है।

नरोत्तम सिंह ने खेती जंगल का एक ऐसा मॉडल खड़ा किया है जिसमें एक तो मेहनत भी कम होती है। दूसरा थोड़ी जमीन में बहुत अधिक फसलें और फल–पौधे लगाकर थोड़े–थोड़े समय में कमाई होती रहती है। नरोत्तम ने अपने डेढ़ बीघा के खेत में चंदन, मसर की दाल, पपीता, एलोवेरा, मक्की, हल्दी, आम और भिंडी लगाई है। जिससे उन्हें थोडे–थोड़े समय बाद कमाई होती रहती है और भूमि ज्यादातर समय फसलों से भरी रहती है, जिससे खरपतवार भी कम पनपते हैं।

नरोत्तम का कहना है कि उन्हें प्राकृतिक खेती के आम और अन्य फलों में बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। उन्होंने बताया कि उनके आम के बागीचे में पहले फल बहुत झड़ते थे, लेकिन जीवामृत और सप्तधान्यांकुर के लगातार प्रयोग से अब फलों का झड़ना लगभग बंद ही हो गया है। वे बताते हैं कि उनके

क्षेत्र में बहुत से लोग आम का उत्पादन करते हैं, इसलिए वे सभी लोगों को अपने बागीचे में किए हुए प्रयोगों के परिणाम बताते हैं। लोग इससे प्रभावित होकर प्राकृतिक खेती के आदानों का प्रयोग अपने खेत–बागीचों में करना शुरू कर चुके हैं।

नरोत्तम ने बताया कि इस साल मक्की में आर्मी वर्म का प्रकोप देखा गया है। मैंने इसमें दशपर्णी अर्क का छिड़काव किया और इसे एक सप्ताह के अंतराल में दोहराया। इससे मुझे आर्मी वर्म से छुटकारा मिल गया जबकि आस–पास के क्षेत्रों में लोगों का बहुत नुकसान हुआ है।

> **किसान-बागवानों को एक-फसलीय प्रणाली से बहुत-फसलीय प्रणाली को अपनाना चाहिए ताकि एक फसल में यदि नुकसान हो भी जाए तो दूसरी फसल उसकी भरपाई कर दे। प्राकृतिक खेती विधि बहु-फसलीय मिश्रित खेती का एक मॉडल है जिसमें किसान-बागवानों के नुकसान की संभावनाएं कम हो जाती हैं।**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 10 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 10 बीघा

फसलें व फल: अदरक, उड़द, मक्की, अरबी, हल्दी, भिन्डी, चावल

रसायनिक खेती में: व्यय – 5,000 आय – 5,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय – 1,500 आय – 1,65,000

पहले थोड़ी भूमि पर ट्रायल लगाकर सीखी प्राकृतिक खेती विधि, अब लीज पर भी भूमि लेकर कमा रहे लाखों

चतर सिंह

सिरमौर के पांवटा साहिब ब्लॉक के केरकावास गांव के युवा किसान चतर सिंह ने खेती–बागवानी को आजीविका का साधन बनाकर युवाओं के लिए एक मिसाल पेश की है। अपनी निजी भूमि न होने के चलते इस युवा किसान ने लीज पर भूमि ली है और उसमें अपनी कड़ी मेहनत और कम लागत वाली वाली प्राकृतिक खेती विधि से लाखों की कमाई करना शुरू किया है। खेती में नए–नए प्रयोग करने और नई तकनीकों को अपनाने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले इस किसान ने प्रदेश में तीन साल पहले शुरू की गई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का नौणी विश्वविद्यालय से पदम्श्री सुभाष पालेकर से प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने प्रयोग के तौर पर इसे अपने ढाई बीघा खेत में शुरू किया और बेहतर परिणाम मिलने के चलते इन्होंने दूसरे ही साल इसे अपनी 8 बीघा भूमि में करना शुरू कर दिया।

प्राकृतिक खेती से मिले परिणामों से चतर सिंह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने ही गांव के खेती छोड़ चुके किसान से 5 बीघा भूमि लीज पर ली और इसके बाद इनमें भी प्राकृतिक खेती विधि से खेती का सफल मॉडल तैयार किया है। चतर सिंह बताते हैं कि उनके खेतों में प्राकृतिक खेती के चमत्कारिक परिणाम देखने को मिले हैं। उन्होंने बताया कि कई ऐसे भी खेत थे जिनमें कई सालों से खेती नहीं की गई थी, उनमें भी

पहली ही बार में बहुत अच्छी पैदावार देखने को मिली है। चतर ने बताया कि 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत उन्हें गौशाला में गोमूत्र को एकत्र करने के लिए अनुदान राशि मिली थी जिससे उन्हें बहुत लाभ मिला है।

चतर सिंह बताते हैं कि पहले जहां वे एक फसलीय प्रणाली से खेती करते थे वहीं अब वे मिश्रित खेती कर एक साथ कई फसलें लगा रहे हैं। जिससे उन्हें थोड़े–थोड़े समय में बाद आय हो रही है। चतर सिंह ने बताया कि उनकी देखा देखी में गांव के अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती के प्रति आकर्षित हो रहे हैं और वे भी इस खेती को अपना रहे हैं।

> **"यह खेती विधि किसान कल्याण में है और इसमें किसान को थोड़े-थोड़े समय में बाद आय होती रहती है, जिससे किसान को कर्ज की जरूरत नहीं पड़ती है और वह चिंतामुक्त रहता है।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 13 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 13 बीघा

फसलें व फल: शिमला मिर्च, राजमाह, लहसुन, मटर, अदरक, राजमा, टमाटर, फ्रासबीन

रसायनिक खेती में: व्यय - 16,000 आय - 1,50,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 1,000 आय - 4,00,000

सूखे की परिस्थितियों में भी मिल रहे अच्छे परिणाम

कौशल दत्त

पच्छाद ब्लॉक के जजोहन गांव के युवा किसान कौशल दत्त ने अपनी मेहनत और बेहतर तकनीक के दम पर सूखे की परिस्थितियों में भी बेहतर फसल पाकर लोगों के सामने एक मिसाल पेश की है। कौशल दत्त ने पहले यूट्यूब और फिर नौणी विश्वविद्यालय से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर इस विधि को अपने खेतों में उतारकर यह कारनामा कर दिखाया है। 9 बीघा भूमि में लहसुन, मटर, टमाटर और एग्जॉटिक वेजिटेबल की खेती करने वाले कौशल दत्त ने बताया कि उन्हें पहले ही साल में अच्छे परिणाम देखने को मिले, इसलिए अगले ही साल उन्होंने अपनी सारी भूमि में इस विधि को अपना लिया। कौशल का कहना है कि इस साल हिमाचल में भयंकर सूखा पड़ा। इस दौरान मेरे आस–पास के किसानों की खेती पर बहुत बुरा असर पड़ा, लेकिन मेरी फसलों में इसका ज्यादा असर नहीं पड़ा। इसे देखकर गांव के अन्य किसान भी अचंभित रह गए। उन्होंने कहा कि मैंने अपने खेतों में मिश्रित खेती की थी और साथ में आच्छादन भी किया था। इससे सूखे की स्थिति में भी फसलें टिकी रही और उत्पादन पर भी विपरीत असर नहीं पड़ा।

कौशल दत्त का कहना है कि उनकी फसलों में रसायनिक खेती के मुकाबले में बहुत कम बीमारियां आई, जिसकी वजह से उनकी आय में किसी प्रकार का असर नहीं पड़ा। कौशल दत्त ने प्राकृतिक खेती से मिल रही सफलता को देखते हुए अब अपनी बंजर पड़ी भूमि में भी कुछ नए खेत तैयार किए हैं और इन खेतों में भी

प्राकृतिक खेती विधि से खेती करने की तैयारी कर ली है।

कौशल दत्त की सफलता को देखकर उनके आस–पास के 10 किसानों भी इस खेती विधि को अपना चुके हैं। कौशल दत्त का कहना है कि प्राकृतिक उत्पादों को बाजार में सही दाम मिल सके इसके लिए उन्होंने 'आपका अपना फार्मर' के नाम से एक किसान उत्पाद संघ बनाया है। इस संघ में उन्होंने अपने आस–पास के प्राकृतिक खेती किसानों को भी जोड़ा है, ताकि उनके प्राकृतिक उत्पादों को भी बाजार मिल सके और उन्हें अच्छे दाम भी मिल सके। कौशल दत्त क्षेत्र के अन्य किसानों को भी इस खेती विधि के बारे में बता रहे हैं ताकि वे भी इस खेती विधि को अपनाकर रसायनों को हतोत्साहित करें और अपनी आय बढ़ा सकें।

> **"यह खेती विधि विकट परिस्थितियों में भी किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही है। इसमें न सिर्फ किसानों का खर्चा कम हो रहा है, बल्कि आय में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है।"**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 9 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 9 बीघा

फसलें व फल: अदरक, मक्की, गोभी, शिमला मिर्च और टमाटर

रसायनिक खेती में: व्यय - 40,000 आय - 5,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 5,000 आय - 4,50,000

पैसे उधार लेकर, लीज की जमीन पर शुरू की प्राकृतिक खेती, कमाया मुनाफा

चत्तर सिंह

शिलाई ब्लॉक के युवा किसान चत्तर सिंह ने प्राकृतिक खेती को फायदे का सौदा साबित कर अपने आस–पास के किसानों के लिए एक उदाहरण पेश किया है। चत्तर सिंह जब प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे तो इसके बाद उन्होंने इसका एक छोटा सा ट्रायल अपने खेतों में लगाया। इसमें सफलता के बाद जब उन्होंने अपने परिवारवालों से इसे बड़े स्तर पर करने की अनुमति मांगी तो उन्हें यह नहीं मिली। इसके बावजूद धुन के पक्के चत्तर सिंह ने हार नहीं मानी और अपने रिस्तेदारों से 20 हजार रूपये उधार लेकर डेढ़ बीघा जमीन लीज पर ली और इस पर प्राकृतिक खेती विधि से लहसुन लगाया। चत्तर सिंह बताते हैं कि उन्हें इस खेती विधि की वजह से बंपर क्राप हुई और उन्होंने इससे 75 हजार रूपये कमाए।

चत्तर सिंह बताते हैं कि इस घटना के बाद मेरे परिवारवाले प्राकृतिक खेती के लिए मान गए हैं और अब मैं अपनी 7 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर रहा हूं। चत्तर सिंह का कहना है कि मैं अब अपने क्षेत्र के पुराने अनाजों जैसे कोदा, कावणी, चौलाई, ढांखरी आलू और मक्की की पुरानी किस्मों को प्राकृतिक खेती विधि के माध्यम से उगाकर इन्हें सहेजने का काम भी कर रहा हूं। प्राकृतिक खेती विधि के प्रयोग से इन पुराने अनाजों के उत्पादन में भी बढ़ोतरी हो रही है।

चत्तर सिंह ने प्राकृतिक खेती में परिणामों को देखकर अब आस–पास की पंचायतों के लोगों को भी प्राकृतिक खेती के गुर सिखाने का काम शुरू किया है। इसके लिए वह कृषि विभाग की आत्मा टीम के साथ मिलकर गांवों के प्रशिक्षण शिविरों में प्राकृतिक खेती की बारीकियों और इसके लाभों के बारे में जानकारी देते हैं। साथ ही किसानों को अपने खेतों में आकर प्राकृतिक खेती के मॉडल को देखने का न्यौता भी देते हैं। चत्तर सिंह का कहना है कि कई किसान उनके खेतों में खड़ी फसलों को देखने के लिए आते हैं और इस खेती विधि के परिणामों को देखकर हैरान रह जाते हैं।

> **“प्राकृतिक खेती विधि में पहले ही साल में बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। मैंने इसे अपने खेतों में करके देखा है इसलिए मैं किसान-बागवानों को इस खेती विधि को अपनाने का आग्रह करता हूं।”**

विस्तृत विवरण:

कुल जमीन: 20 बीघा | **प्राकृतिक खेती के अधीन:** 7 बीघा

फसलें व फल: लहसुन, अदरक, मटर, आलू, टमाटर, मक्की, गेहूं, फ्रासबीन

रसायनिक खेती में: व्यय - 18,000 आय - 2,00,000 | **प्राकृतिक खेती में:** व्यय - 2,000 आय - 3,50,000

सुभाष पालेकर प्राकृतिक से...

कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश

शिलाई में प्राकृतिक खेती पर किया जागरूक

शिलाई। कृषि विभाग द्वारा शिलाई में एक किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र की 150 महिला तथा पुरुष किसानों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी प्रदान करना रहा। कार्यक्रम में जिला परियोजना निदेशक नाहन डा. सतीश कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में किसानों ने प्राकृतिक खेती की जानकारी हासिल की। इस दौरान संगोष्ठी में पशुपालन विभाग की ओर से डा. ललित अजवानी, उद्यान विभाग की ओर से कृषि प्रसार अधिकारी डा. चंबेल सिंह चौहान, कृषि विकास अधिकारी डा. अश्विनी कुमार, कृषि प्रसार अधिकारी डा. प्रदीप कौशल, सुनिधि शर्मा सहित डेढ़ सौ के करीब किसानों ने इस संगोष्ठी में भाग लेकर प्राकृतिक कृषि के बारे में जानकारी हासिल की।

बखोग में किसानों को बांटे प्रमाण पत्र

राजगढ़। कृषि विभाग के सौजन्य से कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आतमा) योजना के तहत डा. सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान कार्यक्रम के तहत दो दिवसीय किसान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन राजगढ़ विकास खंड की ग्राम माटल बखोग के बखोग गांव में किया गया। इस शिविर में विभाग की ओर से आए मोहित कुमार, हिमेंद्र कुमार, कुलदीप कुमार ने किसानों को देशी गाय के गोबर व गौ मूत्र से जीवामृत, घन जीवामृत, बीजामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र, दशपर्णी अर्क, कड़ु अस्त्र, सप्त धान्य अर्क, फफूंद नाशक आदि बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया। इसके साथ-साथ किसानों को सुभाष पालेकर खेती के मुख्य पांच स्तंभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई तथा इसका प्रयोग किसान रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक दवाइयों के स्थान पर कर सकते है। इसका फलों एवं सब्जियों पर कब कब कितनी कितनी मात्रा में प्रयोग करना है इस बारे में किसानों को विस्तार से बताया गया। सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के लिए अनेक अनुदान योजनाएं तैयार की गई है। किसानों को इसका भी भरपूर लाभ उठाना चाहिए। कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना था कि प्राकृतिक खेती से जहा किसानों को आर्थिक लाभ होता है। वहीं इससे पर्यावरण संरक्षण भी होता है। रासायनिक खादों व कीटनाशक दवा के प्रयोग से पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में लगभग 25 किसानों ने भाग लिया व किसानों को प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। किसानों का कहना था कि अब वह रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग पूर्ण रूप से कम कर देंगे। इसको करने से ही किसानों को हजारों रुपए का लाभ होगा। इससे पहले उनको फसलों से बेहतर उत्पादन लेने के लिए हजारों रुपए तो रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों पर खर्च करना पड़ता था।

प्राकृतिक खेती पर किया जागरूक

शिलाई। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कृषि विभाग शिलाई द्वारा ग्राम पंचायत नाया में एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त 47 महिलाओं का एक दल कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत कृषि विज्ञान केंद्र धौलाकुआं ले जाया गया। कृषि विभाग के कृषि विकास अधिकारी डा. अश्वनी कुमार, कृषि प्रसार अधिकारी डा. प्रदीप कौशल ने जानकारी देते हुए बताया कि आज के कैमिकल दौर में सतर्कता बरतना बहुत जरूरी है। फसलों में अत्यधिक मात्रा में डाले जा रहे रासायनिक कीटनाशक और रासायनिक खादों के कुप्रभाव से इनसान के शरीर में दर्जनों बीमारियां घर कर रही है। स्वास्थ्य को मद्देनजर रखते हुए हमें प्राकृतिक खेती की ओर जाना पड़ेगा। शिविर में उपस्थित तीन दर्जन महिलाओं को डाक्टर पालेकर द्वारा निर्देशित प्राकृतिक खेती की ओर जाना होगा तभी हमारा स्वास्थ्य सही रह सकता है। इस मौके पर महिला दिवस पर खंड की 47 महिलाओं का एक दल कृषि विज्ञान केंद्र धौलाकुआं ले जाया गया, जहां उन्हें डाक्टर पालेकर द्वारा निर्देशित प्राकृतिक खेती की विस्तृत जानकारी दी गई।

हिमाचल प्रदेश
कार्तिक तोमर-शिलाई

जिला सिरमौर के शिलाई उपमंडल की ग्राम पंचायत कोटी-उतरोउ के गावँ भटवाड में किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विभाग द्वारा प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया गया

कृषि विभाग ने सुभाष पालेकर द्वारा ईजाद प्राकृतिक खेती प्रणालीके तहत जीवामृत, घनजीवामृत,बीजामृत, फसल सुरक्षा उपायमें प्राकृतिक कीतरोधक नीमास्त्र, दरेकास्त्र,अग्नि शस्त्र,ब्रह्मास्त्र,दशपरणी अर्क,फफूंदनाशक फंगीसाइड,सोठास्त्र,सप्त धान्यांकुर अर्क की विस्तृत जानकारी दी विभाग की ओर से बीटीएम दीपक कपूर,सौरभ कुमार और नितेश कुमार ने प्राकृतिक खेती की मुख्य विशेषताओं फसलों की उपज लेने के लिए संसाधनों को घर पर तैयार करना,मंडी व बाजार से खरीददार नही लाना,प्राकृतिक खेती को हानि पहुचाने वाला कोई भी संसाधन घर व गावँ में निर्मित नही करना उन्होंने कहा कि बीजामृत के लिए केवल देसी गाय का गोबर उपयोग करे आधा गोबर बैल का मिला सकते होलेकिन बैल का गोबर अकेले नही होना चाहिए,भैंस,जर्सी,होल्सटीन गाय का मूत्रवर्जित है गोबर व गौ मूत्र जितना पुराना हो उतना ही लाभकारी है गोबर सात दिनों तक प्रभावशाली होता है प्राकृतिक खेती का नारा है गावँ का पैसा गावँ में और शहर का पैसा भी गावँ में,इस तरह हमारे देश का पैसा देश मे व देश का पैसा विदेश को नही बल्कि विदेश का पैसा देश को लाना ही प्राकृतिक खेती का उद्देश्य है पंचायत के 15 लोगो को इस शिविर में प्रशक्षित किया गया शिलाई कृषि विभाग के कृषि प्रसार अधिकारी प्रदीप कौशल ने बताया कि विभाग द्वारा किसानों को जागरूक करने के लिए इस तरह के शिविर चलाए जा रहे है

किसानों की आय दोगुनी करने के हो रहे प्रयास : कश्यप

पांवटा में किसान मेले का आयोजन

[illegible] साहिब, 23 फरवरी ([illegible]): शनिवार को प्रदेश कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण द्वारा [illegible] मंडी में किसान मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद प्रो. वीरेन्द्र कश्यप ने की।

उन्होंने बताया कि देश व प्रदेश की सरकारें किसानों की आय दोगुनी करने के लिए कार्य कर रही हैं। [illegible] आत्मा के माध्यम से पूरे देश में इस प्रकार के किसान मेलों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलवाने के लिए 585 बड़ी मंडियों को ऑनलाइन किया गया है।

सरकार द्वारा किसानों को ऋण उपलब्ध करवाने के लिए बैंकों के माध्यम से 11 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। सरकार द्वारा कम पानी से अधिक भूमि को सिंचित करने के लिए टपका सिंचाई योजना उपलब्ध करवाई गई है।

उन्होंने बताया कि किसानों को अपनी आय बढ़ाने के लिए पारम्परिक खेती के साथ मधुमक्खी, मछली, दुग्ध उत्पादन व मुर्गी पालन जैसे अतिरिक्त कार्य करने चाहिए। इससे पूर्व उन्होंने किसान मेले में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा जिला में शून्य लागत प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 11 किसानों को पुरस्कृत किया।

इस मौके पर परियोजना निदेशक आत्मा डा. राजेश कौशिक ने मुख्यातिथि को सम्मानित किया। विधायक पांवटा साहिब सुखराम चौधरी ने कहा कि किसानों को खेती के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए आत्मा परियोजना के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा रहा है।

सरकार किसानों की आय दोगुना करने के लिए लगातार कर रही कार्य : वीरेंद्र कश्यप

[illegible]

प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए आगे आएं किसान

संवाद न्यूज एजेंसी

नाहन (सिरमौर)। जिला उपायुक्त डॉ आरके परुथी ने किसानों से प्राकृतिक खेती अपनाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती अपनाकर किसान सिरमौर को प्राकृतिक जिला बनाने के साथ ही स्वस्थ व जहर मुक्त वातावरण बनाने में योगदान दें।

जिला उपायुक्त विकास खंड नाहन व पांवटा साहिब में किसानों के खेतों में जाकर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने गांव जोगीबन में किसान दुर्गाराम के प्राकृतिक खेती मॉडल, बोलीयों गांव में कुलानंद के संसाधन भंडार, गांव डाकरावाला के नरोत्तम, मोहरों व खेरी चेंगन गांव के किसान तुला राम शर्मा के खेतों में उगाए गए नींबू, पपीता, अमरूद व किवी के साथ लगे लहसुन की फसल का अवलोकन किया। इसके बाद उपायुक्त ने पांवटा विकास खंड के कोटोवाला गांव के 25 ऐसे किसानों से मुलाकात कि जो प्राकृतिक विधि से कृषि कर रहे हैं। उनके खेतों का निरीक्षण करते हुए उनकी समस्याओं को भी सुना। इस अवसर पर उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती को अपनाकर न केवल रासायनिक दवाइयों से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। बल्कि, फसल का उत्पादन बढ़ाकर अपनी आर्थिकी को भी मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही सूक्ष्म सिंचाई योजना, कृषि मशीनीकरण व अन्य योजनाओं का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर कृषि उप निदेशक डॉ. डा. राजेश कौशिक, कृषि विकास अधिकारी ऋषि ठाकुर, कृषि प्रसार अधिकारी रणबीर सिंह, बीटीएम सरिता, प्रियंका व एटीएम नरेंद्र मौजूद रहे।

उपायुक्त ने खेतों का निरीक्षण करने के बाद की किसानों से अपील

कृषक प्रशिक्षण शिविर आयोजित

राजगढ़, 24 अक्तूबर (हरदेव): राजगढ़ के नवयुवक मंडल गढ़ोल व कृषी विभाग राजगढ़ द्वारा सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ग्राम गढ़ोल में किया गया। नवयुवक मंडल गढ़ोल के अध्यक्ष विकास पुंडीर ने बताया कि दो दिविसीय शिविर के दौरान कृषी प्रोद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण आत्मा विकास खण्ड राजगढ़ से बीटीएम मोहित कुमार, एटीएम हिमेंद्र कुमार व् मास्टर ट्रेनर कुलदीप कुमार आदी विशेषज्ञों ने किसानों को जीरो बजट प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विशेषज्ञों ने बताया गया कि इस विधी से खेती करने वाले किसान को किसी भी प्रकार की खाद व कीटनाशक रसायन खरीदने की जरूरत नही पड़ती है। किसानों को प्राकृतिक खेती में देसी गाय के गोबर व गौमूत्र से बनने वाले जीवामृत, बिजामृत, ब्रह्मास्त्र, दशपर्णी अर्क, कडु अस्त्र, सप्तधान्य अंकुर अर्क आदि के बारे में जानकारी दी गई। शिविर में राजेन्द्र, भजन सिंह, कमल राज, आदि लोग मौजूद थे।

किसानों को प्राकृतिक खेती के दिए टिप्स

राजगढ़ (सिरमौर)। विकास खंड राजगढ़ की ग्राम पंचायत नेरी कोटली पंचायत के कोटली गांव में कृषि विभाग राजगढ़ ने आत्मा परियोजना के तहत दो दिवसीय सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। जिसमें किसानों को जीवामृत, बीजा अमृत, घन जीवामृत, कड़ू अस्त्र दशपर्णी अर्क के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके साथ ही प्राकृतिक खेती के लाभ व रसायनिक खेती के दुष्प्रभाव के बारे में भी बताया गया। इस शिविर में पंचायत के करीब तीन दर्जन किसानों ने भाग लिया। दो दिवसीय शिविर के अंतिम दिन कृषि विभाग के विषयवाद विशेषज्ञ डॉ. डीपी गौतम ने किसानों ने बहुत सरल तरीके से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में बताया व किसानों के सवालों के जवाब भी दिए। किसानों में बलदेव सिंह, दलीप सिंह ठाकुर, मुकेश ठाकुर व अखिल ने अधिकारियों से प्रश्न पूछे। वक्ताओं ने जानकारी दी कि देसी गाय की खरीद के लिए 25000 तक का अनुदान दिया जा रहा है। इस मौके कृषि विभाग राजगढ़ से साथ आए खंड तकनीकी प्रबंधक डॉ. राधिका नेगी, अरुण कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक व कुलदीप ठाकुर ट्रेनर भी मौजूद रहे। ब्यूरो

प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण

नौहराधार। हिमाचल प्रदेश जिला सिरमौर मंडल श्रीरेणुकाजी के अंतर्गत नौहराधार क्षेत्र के ग्राम पंचायत देवामानल वार्ड नंबर-4 व वार्ड-5 में ग्राम पंचायत प्रधान भूपाल सिंह रोपटा एवं पंचायत समिति सदस्य देवेंद्र सिंह की अध्यक्षता में एग्रीकल्चर के द्वारा प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण का दो दिवसीय शिविर लगाया गया, जिसमें 50 पुरुष और दर्जनों महिलाओं ने भाग लिया। ब्लॉक समिति से आए डाक्टर रुस्तम और बलबीर शर्मा ने प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के बारे जानकारी दी। जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि फसलों की उपज लेने के लिए जिन जिन संसाधनों की आवश्यकता होती है वह सभी घर में ही तैयार करना है। जैसे कि पहला जीवामृत कैसे बनाए दूसरा घनजीवामृत कैसे बनाए व तीसरा बीजामृत कैसे बनाए इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कीटनाशक दवाइयों का उपयोग न करें। इससे फसल के नुकसान के साथ-साथ आपके खेत को भी नुकसान होता है। आप घरेलू दवाइयों का उपयोग करें। जब भी आपने दवाई का प्रयोग करना है आप अपने द्वारा बनाई गई दवाइयों का प्रयोग करें। इससे आप की फसल को बीमारी भी नहीं लगेगी और आप की फसल भी अच्छी होगी।

प्राकृतिक खेती अपनाकर जिला को स्वास्थ्यवर्धक बनाएं

नाहन। प्राकृतिक खेती अपना कर जिला को स्वास्थ्यवर्धक व जहर मुक्त कर वातावरण को स्वच्छ बनाएं। यह अपील उपायुक्त सिरमौर डा. आरके परुथी ने विकास खंड नाहन व पांवटा साहिब के किसानों से उनके खेत में जाकर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का अवलोकन करने के बाद की। इस दौरान उन्होंने गांव जोगीबन में किसान दुर्गा राम के प्राकृतिक खेती मॉडल, बोहलियों गांव में कुलानंद के संसाधन भंडार, गांव ठाकरवाला के नरोत्तम, मोहरी व खेरी कैंथन गांव के किसान तुला राम शर्मा के खेतों में उगाए गए नींबू, पपीता, अमरूद व किवी के साथ लगे लहसुन का अवलोकन किया। इसके पश्चात उपायुक्त ने पांवटा विकास खंड के कोटीवाला गांव के 25 ऐसे किसानों से मुलाकात की जो प्राकृतिक विधि से कृषि कर रहे है तथा उनके खेतों का निरीक्षण करते हुए उनकी समस्याओं को भी सुना। इस मौके पर कृषि उपनिदेशक डा. राजेश कौशिक, कृषि विकास अधिकारी ऋषि ठाकुर, कृषि प्रसार अधिकारी रणबीर सिंह, बीटीएम सरिता, प्रियंका व एटीएम नरेंद्र सहित विभिन्न गांव के किसान उपस्थित थे।

राजगढ़ का करेंगे विकास : राज्यपाल

संवाद सूत्र, राजगढ़ : हिमाचल प्रदेश के संपूर्ण दर्शन करने हों, तो कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, राजगढ़ क्षेत्र में आईए और हिमाचल की संस्कृति और खूबसूरती का आनंद उठाइए। यह भावपूर्ण उद्गार राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने बाथउधार में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के संदर्भ में आयोजित एक शिविर में कहे। राज्यपाल ने कहा कि इस क्षेत्र को संवारने में वह व्यक्तिगत प्रयत्न करेंगे। राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक खेती, जैविक खेती और केंचुआ खेती से आसान और जीरो बजट की है। उन्होंने किसानों से इसे अपनाने का आह्वान किया। आयोजन में मुख्य भूमिका निभाने के लिए स्थानीय उन्नत कृषक एवं बागवान पुर्णीराम वर्मा, अरूण वर्मा, विनोद तोमर, पृथ्वीराज ठाकुर, सतीश ठाकुर की प्रशंसा की। इस मौके पर राजगढ़ के स्थानीय नेता एवं भाजपा प्रदेश महासचिव चंद्रमोहन ठाकुर ने भी लोगों को संबोधित किया। कृषि विभाग अधिकारी राजेश्वर चंदेल ने प्राकृतिक खेती में हुई उन्नति के बारे में जानकारी दी।

राज्यपाल आचार्य देवव्रत बाथउधार में प्राकृतिक कृषि से उत्पादित फल एवं खाद्य पदार्थों की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए ● जागरण

शिलांजी में सजा खेती प्रशिक्षण शिविर

राजगढ़। कृषि विभाग के सौजन्य से कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजना व डाक्टर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान कार्यक्रम के तहत दो दिवसीय किसान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन राजगढ़ विकास खंड की ग्राम पंचायत शिलांजी के पंचड गांव में किया गया। इस शिविर में विभाग की ओर से आए मोहित कुमार, हिमेंद्र कुमार व कुलदीप कुमार ने किसानों को देशी गाय के गोबर व गो मूत्र से जीवामृत, घन जीवामृत, बीजामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र, दशपर्णी अर्क, कद्दू अस्त्र, सप्त धान्य अर्क, फफूंद नाशक आदि बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके साथ-साथ किसानों को सुभाष पालेकर खेती के मुख्य पांच स्तंभों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई। किसानों को बताया गया कि इसका प्रयोग किसान रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक दवाइयों के स्थान पर कैसे किया जा सकता है और इसका फलों एवं सब्जियों पर कब-कब कितनी कितनी मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। साथ ही किसानों को यह जानकारी भी दी गई कि सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के लिए अनेक अनुदान योजनाएं तैयार की गई है और किसानों को इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए। कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना था कि प्राकृतिक खेती से जहां किसानों को आर्थिक लाभ होता है वहीं इससे पर्यावरण संरक्षण भी होता है, जबकि रासायनिक खादों व कीटनाशक दवा के प्रयोग से पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। इस दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में लगभग 25 किसानों ने भाग लिया व किसानों को प्रशिक्षण के प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। किसानों का कहना था कि अब वह रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग पूर्ण रूप से बंद करेंगे।

युवा मंडल की सामाजिक गतिविधियां सराहीं

एनवाईके के राज्य निदेशक ने कार्यों का निरीक्षण किया

डी.सी. ने की प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों से मुलाकात

प्राकृतिक खेती के लिए किया जागरूक

संवाद न्यूज एजेंसी

शिलाई (सिरमौर)। उपमंडल शिलाई की ग्राम पंचायत कोटी-उतरोउ के गांव भटवाड में किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए जागरूक किया गया। कृषि विभाग ने प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। इस दौरान किसानों को सुभाष पालेकर द्वारा ईजाद प्राकृतिक खेती प्रणाली के तहत जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, फसल सुरक्षा उपाय में प्राकृतिक कीटरोधक नीमास्त्र, दरेकास्त्र, अग्नि शस्त्र, ब्रह्मास्त्र, दशपरणी अर्क, फफूंद नाशक फंगीसाइड, सोंठास्त्र, सप्त धान्यांकुर अर्क की विस्तृत जानकारी प्रदान दी गई। बीटीएम दीपक कपूर, सतीश कुमार और नितेश कुमार ने प्राकृतिक खेती की मुख्य विशेषताओं फसलों की उपज लेने के लिए संसाधनों को घर पर तैयार करने और प्राकृतिक खेती को हानि पहुंचाने वाला कोई भी संसाधन घर व गांव में निर्मित नहीं करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि किसान केवल देसी गाय के गोबर का उपयोग करें। आधा गोबर बैल का भी मिलाया जा सकता है। गोबर व गौ मूत्र जितना पुराना होगा उतना ही लाभकारी है। गोबर सात दिनों तक प्रभावशाली होता है। इस शिविर में पंचायत के 15 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया। कृषि विभाग शिलाई के कृषि प्रसार अधिकारी प्रदीप कौशल ने बताया कि किसानों को जागरूक करने के लिए इस तरह के शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

राजगढ़ में बसता है वास्तविक हिमाचल

पहले ही साल 56 हजार मुनाफा कमाया किसान ने

जीरो बजट खेती

प्राकृतिक खेती अपनाकर जिला को स्वास्थ्यवर्धक बनाएं

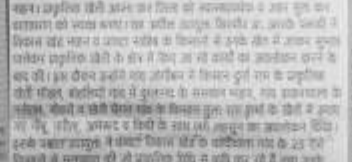

बच्चों को दी प्राकृतिक कृषि के बारे जानकारी

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना से घटी खेती की लागत

- खेती की लागत में 56 फीसदी कमी, 27 प्रतिशत बढ़ी किसानों की आय

किसानों की स्कीमों के दफ्तरों में लगेंगे डिस्प्ले बोर्ड : कंवर

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देगी सरकार

'सरकार करेगी प्राकृतिक उत्पादों के उचित विपणन को प्रभावकारी प्रणाली विकसित'

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने उचित मांग और विपणन के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने पर बल दिया

प्राकृतिक खेती वातावरण के लिए बेहतर : कंवर

प्राकृतिक उत्पादों के उचित विपणन व प्रमाणन के लिए प्रभावकारी प्रणाली विकसित होगी : मुख्यमंत्री

गुड न्यूज़ | एफएओ के विशेषज्ञ करेंगे फूड सिस्टम बनाने में सहयोग

प्राकृतिक खेती के तहत बनेगा सस्टेनेबल फूड सिस्टम

शिमला में खुलेगा पहला आउटलेट

कृषि रसायनों का बढ़ता प्रयोग चिंतनीय

Himachal to start producing its own seeds for growing crops

More than 80% HYV seeds come from outside state; hopes pinned on govt's new initiative using natural practices

EXPRESS NEWS SERVICE
SHIMLA, MARCH 11

Agriculture officials are also hoping that the project will help revive some of the traditional crops in the state

FARMERS IN Himachal Pradesh may soon start using locally developed seeds for growing their crops if a new initiative by the state agriculture department bears fruit. As part of a programme to promote natural farming in the state, the department has identified 12 seed multiplication farms and 130 farmer groups to start developing seed varieties using natural practices.

Currently in Himachal, the seeds used for growing foodgrains and vegetables are mainly sourced from outside the state. According to the state seed certification agency, the area under certified seed production in the state is less than one per cent of the total area under cultivation.

In 2019-20 nearly 77,000 metric tonnes of seeds were used for growing major food crops in the state, including more than 28,000 MT of high-yielding variety (HYV) seeds. More than 80 per cent of these HYV seeds came from outside the state, with the ratio being 100 per cent for maize, millets, barley, peas and vegetables. Potato was the only crop for which the entire amount of HYV seed used was produced within the state.

Around three years ago, the agriculture department began promoting among farmers a method of natural farming which involves nearly zero input costs as only the natural resources of a plant's vicinity are used for its growth, development and health. The department claims that more than a lakh farmers in the state have adopted the method, called 'Subhash Palekar Natural Farming', in an area of around 5,000 hectares.

The seed production programme was launched as part of the same effort, officials said. In a workshop held earlier this week to discuss seed sourcing and multiplication by natural methods, Agriculture Minister Virender Kanwar said that Himachal is dependent on other states for quality seed. "But there are adaptability issues as we have different agro-climatic zones. So the need of the hour is to develop our own seed," he said.

In the pilot project for seed production, which will be carried out in 12 farms and about 130 farmer groups, an annual seed production of 531 MT cereals, 320 MT coarse cereals, 4 MT pseudo cereals and 239 MT pulses has been estimated.

Agriculture officials are also hoping that the project will help revive some of the traditional crops in the state such as red rice and buckwheat (ogla and phafra).

In his budget speech last week, Chief Minister Jai Ram Thakur said that the state government will start a new scheme this year to conserve and propagate seeds of local pulses, traditional grains and off-season vegetables.

प्राकृतिक खेती और मानव स्वास्थ्य

प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक
प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना हिमाचल प्रदेश

कोरोना काल में भी नहीं डगमगाई पराड़ा गांव की अर्थव्यवस्था

आर्थिकी में सुधार लाती प्राकृतिक खेती

पुराना बगीचा उखाड़कर प्राकृतिक विधि से तैयार किया नया बगीचा

बागवानों और उपभोक्ताओं के बीच अब नहीं आएंगे बिचौलिए

खेतों से उपभोक्ताओं तक उत्पाद पहुंचाने को बनेगा सिस्टम

जिला आतमा अधिकारी

डॉ0 साहब सिंह

परियोजना निदेशक आतमा सिरमौर

आधुनिक समय में रासायनिक खेती के कारण लागत का बढ़ता बोझ व उस से होने वाले स्वास्थ्य सम्बन्धी विकारों ने भारतीय समाज में निराशा का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। ऐसे समय में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' जोकि एक बहु–आयामी कृषि पद्धति है, किसानों के लिए आशा की किरण बनकर उभर रही है। इस पद्धति से न केवल खेती की लागत घट रही है, बल्कि उत्पादन में भी कोई कमी नहीं आई है। इस पद्धति को अपनाने से किसानों की आर्थिकी में सुधार हो रहा है।

डॉ0 प्यारे लाल

उप–परियोजना निदेशक–1 आतमा सिरमौर

रसायनिक खेती ने मानव प्रजाति को कई प्रकार के रोगों के मकड़जाल में उलझा दिया है। भूमि की घटती उपजाऊ शक्ति व रसायनिक आदानों की बढ़ती कीमतों ने किसानों की कमर तोड़ दी है। ऐसे समय में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' किसानों के लिए एक संजीवनी के रूप में उभर रही है तथा कृषि से विमुखता की ओर अग्रसर किसानों को पुनः खेतीबाड़ी से जोड़ रही है।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

नाहन

सुरेश कुमार
बीटीएम

अस्मिता अग्रवाल
एटीएम

महेंद्र सिंह
एटीएम

पच्छाद

विनोद कुमार
बीटीएम

शिवानी
एटीएम

मोनिका ठाकुर
एटीएम

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

पांवटा साहिब

प्रवीण कुमार
बीटीएम

नरेंद्र कुमार
एटीएम

महेश
एटीएम

शिलाई

दीपक कपूर
बीटीएम

सौरभ
एटीएम

रजनीश द्विवेदी
एटीएम

संगड़ाह

ऋषि कपूर
एटीएम

विशाल चौहान
एटीएम

राजगढ़

चेत राम
बीटीएम

अरूण कुमार
एटीएम

हिमेंद्र कुमार
एटीएम

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम ($8.4\ \mu g\ TPF g^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम ($112\ \mu g\ TPF g^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

Comparative Economics of SPNF and CF Apple in HP (Rs/ha)

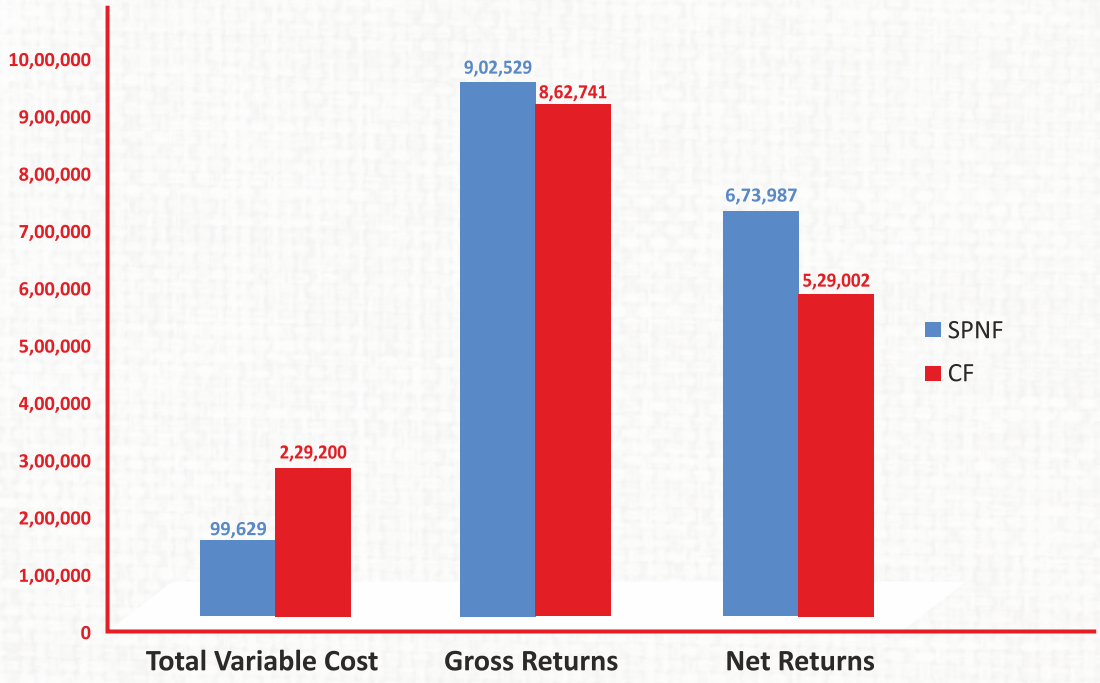

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में प्राकृतिक खेती से गैर – प्राकृतिक खेती की तुलना में बागवानी लागत में कमी दर्ज की गई है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बागवानों का शुद्ध लाभ बढ़ा है।

Comparative disease incidence in SPNF & CF Apple in Shimla, Sirmour District during 2020

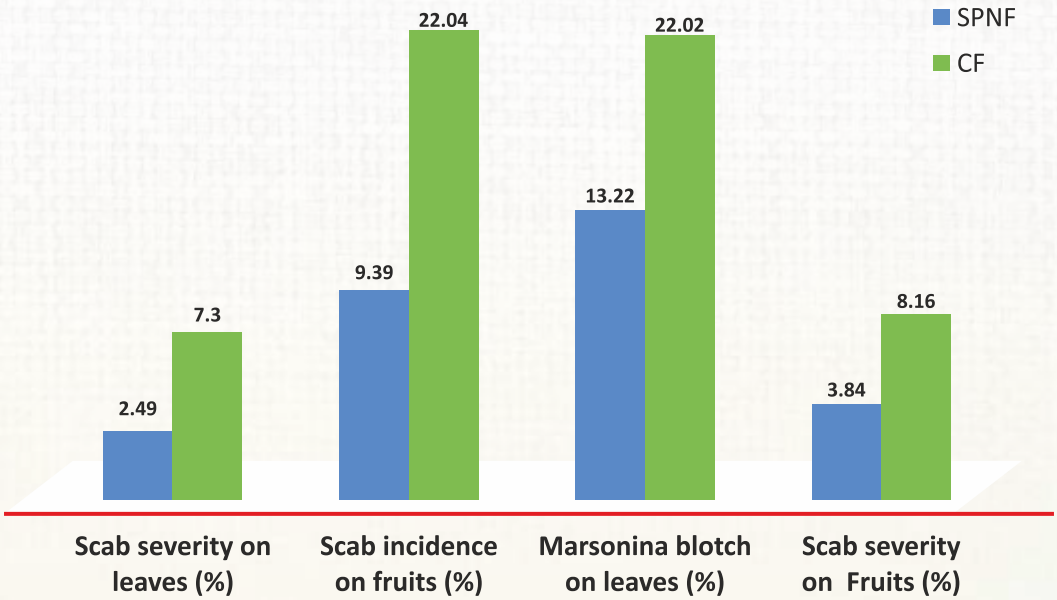

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि प्राकृतिक खेती बागीचों में गैर – प्राकृतिक खेती बागीचों की अपेक्षा सेब पपड़ी रोग (Scab) और आकस्मिक पतझड़ रोग (Premature Leaf Fall) का प्रकोप कम दर्ज किया गया है।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डॉ. साहब सिंह	जिला परियोजना निदेशक आतमा	94184-77990	129	259
2	डॉ. प्यारे लाल	जिला परियोजना उप–निदेशक-1	98051-24089	130	

खण्ड–स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
नाहन	सुरेश कुमार	बीटीएम	94183-08714	11	35
	अस्मिता अग्रवाल	एटीएम	82192-07036	11	
	महेंद्र सिंह	एटीएम	70173-85899	13	
पच्छाद	विनोद कुमार	बीटीएम	78074-67467	12	34
	मोनिका ठाकुर	एटीएम	88822-54682	11	
	शिवानी	एटीएम	81959-03487	11	
पांवटा साहिब	प्रवीण कुमार	बीटीएम	70186-64356	26	78
	नरेंद्र कुमार	एटीएम	70185-66302	26	
	महेश	एटीएम	94189-59577	26	
शिलाई	दीपक कपूर	बीटीएम	82797-60406	11	35
	रजनीश द्विवेदी	एटीएम	98168-42922	12	
	सौरभ	एटीएम	82193-25276	12	
संगड़ाह	–	बीटीएम	-	15	44
	ऋषि कपूर	एटीएम	82197-27339	15	
	विशाल चौहान	एटीएम	78762-70772	14	
राजगढ़	चेत राम	बीटीएम	98166-53005	11	33
	अरूण कुमार	एटीएम	88949-15607	11	
	हिमेंद्र कुमार	एटीएम	94594-99171	11	

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई

कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. | दूरभाषः 0177 2830767 | ईमेलः spnf-hp@gov.in

facebook.com/SPNFHP twitter.com/spnfhp youtube.com/SPNFHP

Designed by : Tinge Media PR Pvt. Ltd. +91-981 682 9937